

सीयूके बुलेटिन

सीयूके में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया





बुद्धि, जब व्यवस्थित हो जाती है, तो ज्ञान बन जाती है। वास्तव में, अपने प्राचीन ज्ञान और मूल्यों को अपने समकालीन शैक्षणिक ज्ञान में समाहित करना अनिवार्य है। हमारे देश की सभ्यता 500 सहस्राब्दियों पुरानी है, जो गहन ज्ञान का स्रोत है, जिसे अक्सर भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) कहा जाता है। लंबे समय से, पश्चिमी शिक्षा मॉडलों के एकाधिकार ने प्राचीन ज्ञान को हाशिये पर धकेल दिया है। इससे हमारी शैक्षणिक गतिविधियों और सभ्यतागत विरासत के बीच एक विच्छेदन पैदा होता है। अब समय आ गया है कि हम अपने अनूठे ज्ञान को समाहित करके आधुनिक शैक्षिक मॉडलों को बढ़ावा दें।

सामाजिक असमानता, जलवायु परिवर्तन और जन स्वास्थ्य संकट जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान किसी एक विषय पर निर्भर रहकर नहीं किया जा सकता। हमारी ज्ञान प्रणाली में नवीन एवं मानवतावादी समाधानों के लिए प्राचीन दर्शन, विज्ञान और स्थायी पद्धतियाँ शामिल हैं। इस प्रणाली को हमारे पाठ्यक्रम में शामिल करने से न केवल आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि हमारी सांस्कृतिक जड़ों की गहरी समझ भी पुनर्जीवित होगी और हम वैश्विक रूप से अधिक जागरूक बनेंगे।

इस प्रणाली को हमारे आधुनिक शिक्षा जगत में प्रसारित करने के लिए, सरकार की दूरदर्शी पहल “एक राष्ट्र, एक सदस्यता (ONOS) शुरू की गई है। इस पहल का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं और डेटाबेस तक राष्ट्रव्यापी पहुँच प्रदान करना है, जिससे ज्ञान तक समान पहुँच सुनिश्चित हो और हमारे विद्वानों और छात्रों का सशक्तिकरण हो। यह पहल, अभूतपूर्व शोध के लिए एक सशक्त मंच तैयार करके वैश्विक छात्रवृत्ति प्राप्त करने में सामूहिकता और एकजुटता का एक महान प्रतीक है।

जैसे-जैसे हमारा राष्ट्र अपनी ज्ञान प्रणाली को पुनः प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, हम सभी को इस मिशन में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छात्रों, प्राध्यापकों, प्रशासकों, सभी की सामूहिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षकों, शोधार्थियों और छात्रों के लिए मेरा संदेश स्पष्ट है कि इस सुनहरे अवसर का उपयोग गुणवत्तापूर्ण शोध करने और शैक्षणिक क्षेत्र में अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए करें। हमारे राष्ट्र की इस पहल में सभी की सक्रिय भागीदारी एक समृद्ध शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देगी।

प्रो. बट्ट सत्यनारायण

कुलपति

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी



हमारा ग्रह हमारा घर है। यह हमें सब कुछ देता है। जिस हवा में हम साँस लेते हैं, जिस पानी को हम पीते हैं, और जिस भोजन से हमें पोषण मिलता है। लेकिन हमारी वर्तमान जीवनशैली इस घर को नुकसान पहुँचा रही है। चूँकि हम उसी पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहे हैं जो हमें जीवित रखता है, इसलिए हम इस बारे में बात करने के लिए और इंतज़ार नहीं कर सकते। हम समाचारों में देखते हैं कि कुछ शहरों की हवा में साँस लेना मुश्किल हो रहा है। यह सिर्फ सुर्खियों की बात नहीं है। यह हम सभी के जीवन को प्रभावित करता है और उस दुनिया को परिभाषित करेगा जो हमें विरासत में मिलेगी।

आईक्यूएयर की विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट ने नई दिल्ली को बार-बार दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानियों में शुमार किया है, जहाँ एक्यूआई (वायु गुणवत्ता सूचकांक) 140 से ऊपर है। इसी तरह, जल प्रदूषण, वनों की कटाई और बढ़ती जनसंख्या भी गंभीर समस्याएँ हैं। यूएनईपी के अनुसार, हर साल 19-23 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा जलीय पारिस्थितिक तंत्र में रिसता है, जिससे झीलें, नदियाँ और समुद्र प्रदूषित होते हैं। ये सभी गतिविधियाँ हमारे प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करती हैं और जानवरों और पौधों के लिए आवासों को असुरक्षित बनाती हैं। लेकिन आशा की किरण अभी भी बाकी है।

हममें बदलाव लाने की ताकत है, और इसकी शुरुआत छोटे-छोटे, रोज़मर्रा के फैसलों से होती है। यह कोई बड़े-बड़े काम नहीं हैं; यह हमारी आदतों को बदलने के बारे में है। हालाँकि हममें से ज़्यादातर लोग 4R सिद्धांत से परिचित हैं, जिसमें रिप्र्यूज़, रिड्यूस, रीयूज़ और रीसाइकल शामिल हैं, हमें इसे अपने रोज़मर्रा के जीवन में अपनाने के लिए सचेत प्रयास करने चाहिए। हमें बड़े, सकारात्मक कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्लास्टिक के बजाय पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को अपनाना, पानी का बुद्धिमानी से उपयोग करके उसे बचाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना। और सबसे ज़रूरी, ज़्यादा से ज़्यादा पेड़ लगाएँ। ये हमारी हवा को शुद्ध करने और प्रदूषण से लड़ने के लिए ज़रूरी हैं। यह हमारी चिलचिलाती गर्मियों से बचने का सबसे अच्छा तरीका भी है। इनमें से हर एक कार्य, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, एक शक्तिशाली आंदोलन का रूप ले लेता है। आज की युवा पीढ़ी पहले से ही दुनिया से इतनी जुड़ी हुई है, और यह आपके नेतृत्व का समय है। आपका हर छोटा कदम, आपका हर छोटा सा बदलाव, एक बड़ी और ज़्यादा प्रभावशाली कहानी का निर्माण करता है। हमारे प्यारे छात्रों के लिए मेरा संदेश सरल है: आइए आज ही अपने जीवन में ये छोटे-छोटे बदलाव करने का वादा करें और अपने दोस्तों, परिवार और सहपाठियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। साथ मिलकर काम करके, हम अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं और सभी के लिए एक स्वस्थ, टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्रो. आर. आर. बिरादार

कुलपति

कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

सीयूके ने महत्वाकांक्षी विद्वानों को सशक्त बनाने के लिए यूजीसी-नेट कोचिंग शुरू की



5 मई, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपने शिक्षा स्कूल में यूजीसी-नेट कोचिंग कक्षाओं का उद्घाटन किया है, जो शिक्षण और अनुसंधान करियर के लिए प्रतियोगी पात्रता परीक्षा की तैयारी कर रहे स्नातकोत्तर छात्रों को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करेगा।

लॉन्च के अवसर पर बोलते हुए, शिक्षा संकाय के डीन, प्रो. जी. आर. अंगड़ी ने अनुशासन और दैनिक अध्ययन के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “यूजीसी-नेट परीक्षा पास करने के लिए एकाग्रचित होकर अध्ययन करना बेहद ज़रूरी है। रोज़ाना कम से कम दो घंटे लगातार तैयारी ज़रूरी है। अगर आप इसे एक महीने तक करते हैं, तो आप परीक्षा ज़रूर पास कर लेंगे।” प्रो. अंगड़ी ने छात्रों को जूनियर रिसर्च फ़ेलोशिप (जेआरएफ) के लिए जल्द से जल्द लक्ष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और इसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पीएचडी करने के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव बताया।

शिक्षा विभाग के दो जूनियर रिसर्च फेलो, दुर्गा प्रसाद और अश्विन ने भी प्रेरणात्मक अंदाज़ में अपनी नेट सफलता की कहानियाँ साझा कीं। उनकी लगन और स्मार्ट तैयारी ने इच्छुक उम्मीदवारों को सफलता पाने के लिए ज़रूरी चीज़ों की एक झलक दी।

कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डॉ. एन. अमरेश्वरन ने किया और संकाय सदस्यों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य डॉ. मयूर पुजारी, डॉ. आशालता, डॉ. निशा प्रजापति, डॉ. श्रीदेवी, डॉ. सी. मंडल, डॉ. बी.पी. रेड्डी, सुश्री ज्योत्सना और श्री संतोष उपस्थित थे।

इन कोचिंग कक्षाओं की शुरुआत के साथ, सीयूके छात्रों को सशक्त बनाने और भावी शिक्षकों व शोधकर्ताओं को आकार देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। कई प्रतिभागियों के लिए, यह पहल न केवल परीक्षा की तैयारी का एक सफ़र है, बल्कि शैक्षणिक उत्कृष्टता का मार्ग भी है।

UGC-NET
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
NATIONAL ELIGIBILITY TEST

सीयूके सेमिनार में आधुनिक शिक्षा जगत में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका पर चर्चा



6 मई, 2025: सीयूके के कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि तनाव, नैतिक पतन और बढ़ती सामाजिक चुनौतियाँ भारतीय परंपराओं में निहित मूल्य-आधारित शिक्षा की तत्काल वापसी की माँग करती हैं। वे भारतीय शिक्षा मंडल (बीएसएम), नई दिल्ली के सहयोग से सीयूके द्वारा आयोजित वर्तमान शिक्षा जगत में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की प्रासंगिकता विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

प्रो. सत्यनारायण ने कहा, “मानव जीवन भौतिकवादी हो गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली में मानवीय मूल्यों, नैतिकता और आचार-विचार की कमी के कारण समाज में आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ रही हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारतीय ज्ञान प्रणाली तनाव पर विजय पाने, मानवीय सार को मज़बूत करने और पर्यावरणीय व सामाजिक चिंताओं का समाधान करने के मार्ग प्रदान करती है।

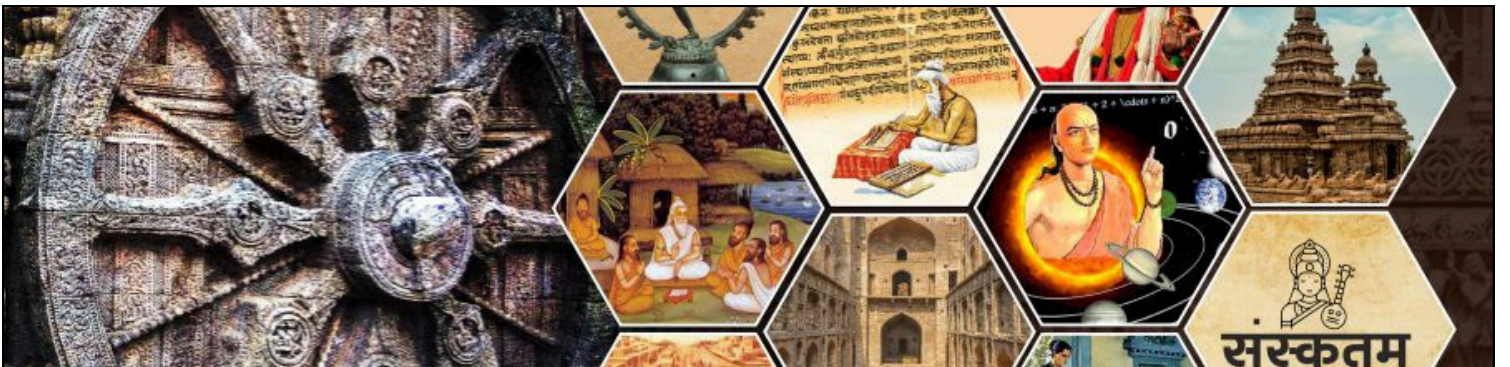
मुख्य वक्ता, पुणे विश्वविद्यालय के आईकेएस विभागाध्यक्ष डॉ. वासुदेव ताल ने इस पर प्रकाश डाला कि जैसे-जैसे बात अधिक लोग सांस्कृतिक पहचान की

तलाश में हैं,

आईकेएस की प्राथमिकता बढ़ रही है। उन्होंने कहा, आईकेएस का मुख्य लक्ष्य सभी क्षेत्रों में भारतीयता लाना है। अनुबंध चतुष्टय - योग्यता, विषय, लाभ और सुविधा - को समझकर हम अपने ज्ञान भंडार से फिर से जुड़ सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि संजय घोदावत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. वेंकटेश रायकर ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) को आकार देने में बीएसएम की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि स्कूलों को भारत की संस्कृति, इतिहास और मूल्यों को फिर से प्रस्तुत करना चाहिए।

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने कहा कि कला, चिकित्सा, अर्थशास्त्र और आयुर्वेद के क्षेत्र में आईकेएस युवाओं को मनोवैज्ञानिक चुनौतियों से निपटने और भारत को विश्व गुरु के रूप में पुनः स्थापित करने में मदद कर सकता है। इस संगोष्ठी में संकाय, शोधार्थी और छात्र एक साथ आए और भारत के शाश्वत ज्ञान को आधुनिक शिक्षा में समाहित करने का आह्वान किया गया।



सीयूके ने विश्व पर्यावरण दिवस पर स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई



5 जून, 2025: सीयूके ने विश्व पर्यावरण दिवस को इस आह्वान के साथ मनाया: भविष्य के लिए संरक्षण, सुरक्षा और पौधरोपण करें। छात्रों और शिक्षकों ने स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण गतिविधि में हाथ मिलाया, जिससे परिसर जीवंत हो उठा। दिन के कार्यक्रमों का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने किया, जिन्होंने हरित पहल की शुरुआत के उपलक्ष्य में एक पौधा लगाया। उन्होंने कहा, “आज हम जो भी पौधा लगाते हैं, वह एक स्वस्थ कल की ओर एक कदम है। उन्होंने विश्वविद्यालय समुदाय से पर्यावरण संरक्षण को वर्ष में एक बार की रस्म के बजाय एक दैनिक ज़िम्मेदारी बनाने का आग्रह किया।

छात्रों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे परिसर में नई ऊर्जा और उद्देश्य की एक साझा भावना भर गई। सफाई और पौधे लगाने का यह सरल लेकिन प्रतीकात्मक कार्य इस वर्ष के पर्यावरण दिवस के व्यापक विषय—सामूहिक परिवर्तन के लिए व्यक्तिगत प्रयास—को प्रतिबिंबित करता है।

विधि अध्ययन स्कूल के डीन डॉ. बसवराज कुबाकड्डी सहित कई संकाय सदस्य इस अभियान में शामिल हुए और उन्होंने स्थायित्व प्रथाओं में उदाहरण प्रस्तुत करने वाले शैक्षणिक संस्थानों के महत्व पर प्रकाश डाला।

जैसे-जैसे पूरे परिसर में पौधे रोपे गए, यह उत्सव एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता रहा कि सार्थक परिवर्तन छोटे, निरंतर कार्यों से शुरू होता है। सीयूके के लिए, यह दिन केवल एक वैश्विक आयोजन का प्रतीक नहीं था, बल्कि पर्यावरण के प्रति ज़िम्मेदार नागरिकों के पोषण में अपनी भूमिका की पुनः पुष्टि का भी दिन था।



प्रो० अमरेंद्र मत्स को सीयूके में नए आईक्यूएसी निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया

14 जून, 2025: इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. अमरेंद्र मत्स को सीयूके में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) का नया निदेशक नियुक्त किया गया है। उनका दो वर्षीय कार्यकाल सीयूके के शैक्षणिक और संस्थागत मानकों को मज़बूत करने की ज़िम्मेदारी के साथ शुरू होगा।

औपचारिक रूप से कार्यभार 13 जून, 2025 को हिंदी विभाग के निवर्तमान निदेशक प्रो. गणेश पवार द्वारा प्रो. मात्सा को सौंपे जाने के साथ ही स्थानांतरित कर दिया गया। यह परिवर्तन न केवल नेतृत्व में परिवर्तन का प्रतीक है, बल्कि विश्वविद्यालय की गुणवत्ता आश्वासन पहलों की निरंतरता का भी प्रतीक है। नए निदेशक के सहायक के रूप में, गणित विभाग के डॉ. संदीप एन और कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग के डॉ. नागराज धारवाड़कर को उप-निदेशक नियुक्त किया गया है। उम्मीद है कि यह टीम मिलकर शिक्षण, अनुसंधान और प्रशासन में उत्कृष्टता के प्रति सीयूके की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाएगी।



11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

21 जून, 2025: सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा “योग न केवल हमारे शरीर को, बल्कि हमारे पूरे जीवन को स्वस्थ रखता है। योगाभ्यास स्वस्थ मन और शरीर के साथ हमारे करियर को सफल बनाता है। वे सीयूके में 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह के उद्घाटन के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, “पिछले 11 वर्षों से, 175 से अधिक देशों में योग दिवस मनाया जा रहा है। यह मानव जीवन में योग के महत्व को दर्शाता है। खुद को खुश और स्वस्थ रखने के लिए योग का अभ्यास ज़रूरी है। राष्ट्र का स्वास्थ्य मानव स्वास्थ्य से मापा जाता है। हमारा स्वास्थ्य ही राष्ट्र की संपत्ति है। हम सभी को कम से कम एक घंटा योगाभ्यास के लिए अवश्य निकालना चाहिए। क्योंकि योग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए सर्वोत्तम औषधि है। योग दिवस पर योग करना ही पर्याप्त नहीं है। हमें प्रतिदिन योग करने का संकल्प लेना होगा।”

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा, योग तनाव, रक्तचाप, शुगर, हृदयाघात, वजन घटाने आदि की औषधि है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन इसके महत्व और दुनिया भर में एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग की थीम को दर्शाता है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर युवाओं को योग को एक अनुशासन के रूप में अपनाना होगा। यह एक स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सहायक है और इस प्रकार विकसित भारत-2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है।

डीन स्कूल ऑफ एजुकेशन और कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. जीआर अंगड़ी ने सभा का स्वागत किया। सरकार के 200 से अधिक छात्र। हाई स्कूल, सुन्तनूर और विद्या वर्धक संघ हाई स्कूल, कदागांची। शिक्षकों के साथ-साथ मलया हिरेमथ, श्रीमती संगीता, सैयदसाब मद्यल, विलास जाधव, मल्लिकार्जुन पूजारी ने उत्सव में भाग लिया।



लोकतंत्र के काले दिनों को याद करते हुए: सीयूके ने संविधान हत्या दिवस मनाया

25 जून, 2025: सीयूके के माननीय कुलपति प्रोफेसर बट्टू सत्यनारायण ने परिसर में संविधान हत्या दिवस 2025 के आयोजन की अध्यक्षता करते हुए कहा "आपातकाल औपनिवेशिक शासन से भी बदतर अनुभव था - मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, नागरिकों को चुप करा दिया गया, और लोकतंत्र को ही परीक्षण पर रखा गया"

उन्होंने याद दिलाया कि कैसे न्यायपालिका को आपातकाल के दौरान अपने सबसे बड़े खतरे का सामना करना पड़ा था, जब 32 न्यायाधीशों को हटा दिया गया था और चुनाव स्थगित कर दिए गए थे। उन्होंने आग्रह किया, "मीसा अधिनियम का इस्तेमाल नागरिकों को बिना किसी कारण के गिरफ्तार करने के लिए किया गया था। अब समय आ गया है कि हम लोकतंत्र के अर्थ को सही मायने में समझें, जो भारत की नींव है।"



कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने आगे कहा कि आपातकाल आर्थिक अधिकारों का भी उल्लंघन था। उन्होंने आम लोगों की पीड़ा पर ज़ोर देते हुए कहा, "सामाजिक न्याय खतरे में पड़ गया, गरीबी थोप दी गई और भोजन व बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित कर दिया गया।"

सत्र का उद्घाटन करते हुए, नोडल अधिकारी प्रो. आर. एस. हेगड़ी ने आपातकाल को "विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के इतिहास में एक शर्मनाक अवधि" कहा और छात्रों से राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मजबूत करने के लिए इससे सीखने का आग्रह किया।

सीयूके ने जिला योगासन खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया



8 जुलाई, 2025: सीयूके ने 6 जुलाई, 2025 को वीरशैव कल्याण मंडप, कलबुर्गी में आयोजित कलबुर्गी एवं बीदर जिला योगासन खेल प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अनुशासन और दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए, सीयूके के छात्रों और शिक्षकों ने विभिन्न श्रेणियों में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया, जिससे योगासन खेलों में विश्वविद्यालय की बढ़ती ताकत का प्रमाण मिला।

वरिष्ठ आयु वर्ग (18-28 वर्ष) में, बाबूलाल बिंद (भौतिकी विभाग) ने पारंपरिक योगासन - पुरुष में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि नरेंद्र पाटिल (अर्थशास्त्र विभाग) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महिला प्रतियोगियों में, प्रतिमा (भौतिकी विभाग) ने पारंपरिक योगासन में प्रथम स्थान प्राप्त किया, प्रतिभा (भौतिकी विभाग) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, और भाग्यश्री (व्यावसायिक अध्ययन विभाग) ने कलात्मक योगासन (एकल) में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सीयूके के

संकाय ने भी प्रतियोगिता में शानदार

प्रदर्शन करके गौरव बढ़ाया। डॉ. देविका दबके (गणित विभाग), जिन्होंने वरिष्ठ वर्ग सी (45-55 वर्ष) में प्रतिस्पर्धा की, ने पारंपरिक योगासन - महिला में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी उपलब्धियों ने उन्हें राज्य स्तरीय योगासन चैंपियनशिप में जिले का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान किया है, जिससे सीयूके एक मजबूत दावेदार के रूप में स्थापित हुआ है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण, कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार, योग समन्वयक डॉ. एस. लिंगमूर्ति, डीन प्रो. जी. आर. अंगड़ी, और योग प्रशिक्षक सुश्री ज्योस्तना अम्बेवाडकर और श्री संतोष बाशेट्टी ने विजेताओं को बधाई दी और उनकी प्रतिबद्धता और उत्साह की सराहना की।

प्रो. आर आर बिरादार कहते हैं, “एक राष्ट्र, एक सदस्यता अनुसंधान में नवीनता को सक्षम बनाती है”

9 जुलाई, 2025: सीयूके ने “सामाजिक विज्ञान में युवा संकाय सदस्यों के लिए अनुसंधान पद्धति और गुणवत्ता प्रकाशन” पर आईसीएसएसआर-प्रायोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम (सीबीपी) का उद्घाटन किया, जो अनुसंधान संस्कृति और शैक्षणिक उत्कृष्टता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए, सीयूके के कुलसचिव, प्रो. आर. आर. बिरादार ने सुलभ शोध मंचों के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, एक राष्ट्र, एक सदस्यता पहल 30,000 से ज़्यादा प्रकाशकों और 13,000 पत्रिकाओं तक मुफ्त पहुँच प्रदान करती है। वैज्ञानिक प्रकाशनों में भारत विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर है, जबकि उद्धरणों में केवल नौवें स्थान पर है। यह हमें दर्शाता है कि अब समय आ गया है कि व्यवहार्यता, नवीनता, नैतिकता और समाज के लिए प्रासंगिकता के साथ।” शोध को गंभीरता से लिया जाए।



निदेशक, प्रो. बसवप्रभु जिरली ने ज्ञान प्रणालियों को आकार देने में युवा संकाय सदस्यों की भूमिका पर ज़ोर दिया।

कार्यक्रम निदेशक और शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य प्रो. जी. आर. अंगड़ी ने गुणवत्तापूर्ण शोध और उच्च शिक्षा के बीच महत्वपूर्ण संबंध पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “शोध की गुणवत्ता उच्च शिक्षा का भविष्य तय करती है। यह कार्यक्रम शोध और समाज को व्यापक स्तर पर जोड़ता है।” मुख्य भाषण देते हुए,

धारवाड़ स्थित बहु-विषयक विकास अनुसंधान केंद्र (सीएमडीआर) के

उन्होंने कहा, “राष्ट्र निर्माण के लिए अनुसंधान में संलग्न होना और ज्ञान उत्पादन को मजबूत करने वाली कठोर प्रथाओं को प्रोत्साहित करना समय की माँग है।” 7 जुलाई से 18 जुलाई, 2025 तक चलने वाला यह दो-सप्ताह का कार्यक्रम, विभिन्न राज्यों के युवा संकाय सदस्यों और विद्वानों को सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में उनके शोध पद्धति कौशल और प्रकाशन गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए एक साथ लाता है।

सीयूके संगोष्ठी ने भारत में कानूनी सुधारों की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया



11 जुलाई, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के विधि विभाग द्वारा आयोजित नए आपराधिक कानून विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी में भारत के औपनिवेशिक काल के कानून सुधार की दिशा में एक निर्णायक कदम पर चर्चा हुई। केंद्रीय जासूसी प्रशिक्षण संस्थान, बंगलोर और गृह मंत्रालय के पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (बीपीआरएंडडी) के सहयोग से “एक दिन, एक विश्वविद्यालय” अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में देश के नवीनतम कानूनी सुधारों पर चर्चा करने के लिए कानूनी विशेषज्ञ, पुलिस अधिकारी और शिक्षाविद एकत्रित हुए।

मुख्य भाषण देते हुए, सेवानिवृत्त प्रधान सत्र एवं जिला न्यायाधीश, श्री कडलूर सत्यनारायणाचार्य ने पुराने औपनिवेशिक कानूनों को निरस्त करने के ऐतिहासिक महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “आज़ादी के 75वें वर्ष के बाद, अब जाकर हमने उन्हें बदलने के लिए एक निर्णायक कदम उठाया है। सामाजिक स्थिरता बनाए रखने और हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त लोगों की स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए कानूनी सुधार आवश्यक हैं।”

बीपीआरएंडडी के उप महानिरीक्षक श्री राजशेखर एन ने ज़ोर देकर कहा कि कानून नागरिक-केंद्रित होने चाहिए। उन्होंने पुलिस के लिए प्रक्रियागत अद्यतनों के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसमें ज़ीरो एफ़आईआर और ई-एफ़आईआर जैसी व्यवस्थाएँ शामिल हैं, और छात्रों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सुधारों से परिचित होने के लिए प्रोत्साहित किया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए, सीयूके के कुलसचिव, प्रो. आर. आर. बिरादार ने उभरती चुनौतियों से निपटने की तात्कालिकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “हमें पुराने कानूनों की पहचान करनी होगी और साइबर अपराध जैसे आधुनिक मुद्दों से निपटने के लिए सुधार लाने होंगे।” संगोष्ठी की शुरुआत स्कूल ऑफ़ लीगल ज्यूरिस्प्रूडेंस स्टडीज के डीन, डॉ. बसवराज एम. कुबकड्डी के स्वागत भाषण से हुई और डॉ. अनंत डी. चिंचुरे के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन हुआ। संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे संगोष्ठी संवाद का एक जीवंत मंच बन गई।

सीयूके ने जनरेटिव एआई पर संकाय विकास कार्यक्रम की मेजबानी की, शिक्षा में परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला



12 जुलाई, 2025: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब कोई दूर की बात नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की हकीकत है—और शिक्षकों को इसे अपनाने के लिए तैयार रहना होगा। यह संदेश जनरेटिव एआई पर एक दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी) में दिया गया, जिसका आयोजन सीयूके ने विश्वेश्वरैया पीएचडी योजना के तहत कैपेबल इंडिया, बैंगलोर और कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीएसआई) के सहयोग से किया था।

अपने संबोधन में, सीयूके के कुलसचिव, प्रो. आर. आर. बिरादार ने विभिन्न क्षेत्रों में एआई की बढ़ती प्रासंगिकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “जनरेटिव एआई उपकरण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रहे हैं। एआई जीवन के सभी क्षेत्रों में जंगल की आग की तरह फैल रहा है।”

उदाहरण देते हुए, उन्होंने बताया कि कैसे एआई-सक्षम ड्रोन कृषि को बदल रहे हैं, कैसे IoT-संचालित स्वास्थ्य सेवा उपकरण वास्तविक समय में रोगी की प्रगति पर नज़र रख रहे हैं, और कैसे स्वचालन चालक रहित कारों जैसे नवाचारों के साथ ऑटोमोबाइल निर्माण जैसे उद्योगों को नया रूप दे रहा है। उन्होंने आगे कहा, “एआई शिक्षा में क्रांति ला रहा है, अनुसंधान को नया रूप दे रहा है, और शैक्षणिक यात्रा को बदल रहा है।”

कार्यक्रम के संयोजक प्रो. आर. एस. हेगड़ी ने नई तकनीकों को अपनाने में शिक्षकों की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “शिक्षकों को एआई का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में छात्रों से आगे रहना चाहिए। इस तरह के एफडीपी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि प्राप्त ज्ञान को छात्रों के बीच साझा और प्रचारित किया जाना चाहिए।”

कैपेबल इंडिया के सह-संस्थापक श्री उमंग सुराना और श्री मोहम्मद अमीर ने सत्रों का संचालन किया, जिन्होंने प्रतिभागियों को जेमिनी, नोटबुकएलएलएम, गामा, लवएबल ऐप और एन8एन जैसे उन्नत एआई टूल्स से परिचित कराया। एयरबस इंडिया के एक एआई कॉर्पोरेट प्रशिक्षक द्वारा एक विशेष प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में कलबुर्गी, रायचूर, विजयपुर, बागलकोट और सोलापुर के 70 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन सह-संयोजक डॉ. राकेश कुमार गोदी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दिन का समापन एक सशक्त संदेश के साथ हुआ: शिक्षकों के लिए, एआई को अपनाना वैकल्पिक नहीं है यह भविष्य के लिए तैयार कक्षाओं को आकार देने और अगली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को पोषित करने के लिए आवश्यक है।

“कृत्रिम बुद्धि (एआई) मनुष्यों की जगह नहीं ले सकती। ज्ञान पीढ़ियों से पुस्तकों के माध्यम से प्रसारित होता रहा है”: बट्टू सत्यनारायण

15 जुलाई, 2025: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रभुत्व वाले इस युग में, ज्ञान और समाज को आकार देने में पुस्तकों की शाश्वत भूमिका की सीयूके में जोरदार पुष्टि की गई। विश्वविद्यालय ने डॉ. शिल्पा एस. उपलॉकर, डॉ. राघवेंद्र बी. बोनाल और डॉ. चिक्कमंजू द्वारा लिखित पुस्तक “डीडीसी रेडीमेड क्लास नंबर फॉर एग्रीकल्चर एंड एलाइड साइंस” का विमोचन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि कोई भी तकनीक सीखने की मानवीय भावना का स्थान नहीं ले सकती। उन्होंने कहा, “कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मनुष्य की जगह नहीं ले सकती। पीढ़ियों से पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान का संचार होता रहा है। पुस्तकें न केवल ज्ञान का हस्तांतरण करती हैं, बल्कि समस्याओं के समाधान में भी सहायक होती हैं। विश्वविद्यालय ऐसी ही समस्याओं के समाधान के लिए अस्तित्व में हैं। पुस्तकालय एक महासागर के समान है, और पुस्तकों का वर्गीकरण आवश्यक है—यह पुस्तक इस विषय पर बहुमूल्य ज्ञान प्रदान करती है।”

मुख्य अतिथि, यूएस धारवाड़ के कुलपति, डॉ. पी. एल. पाटिल ने पुस्तक वर्गीकरण के सार्वभौमिक महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “यह पुस्तक दुनिया भर के विश्वविद्यालयों के लिए एक उपयोगी संदर्भ का काम करेगी। पुस्तकें लिखना केवल अकादमिक कार्य नहीं है; यह समाज की समस्याओं को संबोधित और समझकर समाज की मदद करता है।”

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा, “पुस्तक लेखन एक सर्वोत्तम अभ्यास है—यह शिक्षकों और छात्रों दोनों को प्रेरित करता है।”



संयोजक डॉ. राघवेंद्र बी. बोनाल ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पुस्तक को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के अनुरूप एक व्यापक, उपयोग में आसान उपकरण के रूप में डिज़ाइन किया गया है। सह-संयोजक डॉ. शिल्पा एस. उपलॉकर ने कहा कि यह कार्य व्यापक शोध का परिणाम है।

इस कार्यक्रम में सीयूके और कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के डीन, विभागाध्यक्ष, समन्वयक और अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. शैलजा कोनेक के स्वागत भाषण से हुई और समापन श्री राकेश पाटिल के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगीत एवं राष्ट्र गान के साथ हुआ।

सीयूके के सेमिनार में बिरसा मुंडा और आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की स्वतंत्रता में भूमिका को सम्मानित किया गया



17 जुलाई, 2025: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगवान बिरसा मुंडा और अन्य जनजातीय योद्धाओं की विरासत को “भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिरसा मुंडा और अन्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान” विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सामने लाया गया, जिसका उद्घाटन भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली के सहयोग से सीयूके में किया गया।

मुख्य भाषण देते हुए, प्रख्यात हिंदी साहित्यकार और पूर्व आईएसएस अधिकारी श्री रणेंद्र जी ने बिरसा मुंडा के आजीवन अन्याय के विरुद्ध संघर्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, “बिरसा मुंडा बचपन से ही स्वतंत्रता संग्राम में शामिल थे। आदिवासी इतिहास समृद्ध है और बुद्ध व अशोक के समय से जुड़ा है, लेकिन औपनिवेशिक काल से ही हाशिए पर रहा है। 13 फरवरी, 1832 को 250 मुंडा सेनानियों ने अंग्रेजों के खिलाफ अपने प्राणों की आहुति दी, जिसमें महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसी पूजन और मद्यपान से परहेज सहित बिरसा मुंडा के दस मार्गदर्शक सिद्धांत उनके सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। ‘भगवान’ उपाधि उनकी आत्मा का प्रतीक है।”

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस बात पर जोर दिया कि स्वतंत्रता आदिवासी समुदायों के बलिदान से अविभाज्य है। उन्होंने कहा, “बिरसा मुंडा का योगदान प्रतिरोध से कहीं आगे तक फैला था—उन्होंने जंगलों, पहचान और सम्मान के लिए संघर्ष किया। विकसित भारत 2047 के लिए, हमें हर समुदाय को समाज के अग्रभाग में लाना होगा।”

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने आदिवासियों के योगदान पर और अधिक शोध की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन प्रो. विक्रम विसाजी ने कहा, “आदिवासियों ने हमें दिखाया है कि मनुष्य के रूप में कैसे जीना चाहिए। इतिहास ने उनकी आवाजों को दबा दिया है, और विश्वविद्यालयों को उन्हें फिर से कहानी में शामिल करना चाहिए।” इस सेमिनार में देश भर से संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों ने भाग लिया। प्रो. संदीप रणबीरकर द्वारा समन्वित इस कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ।

सीयूके ने ‘नशा मुक्त भारत पखवाड़ा’ शुरू किया, नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई का आह्वान किया

23 जुलाई, 2025: युवाओं को मादक द्रव्यों के सेवन के बढ़ते खतरे से बचाने के एक ज़रूरी आह्वान के साथ, सीयूके ने दो सप्ताह के “नशा मुक्त भारत पखवाड़ा” अभियान का उद्घाटन किया। यह पहल समान अवसर प्रकोष्ठ, समाज कार्य विभाग और मनोविज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही है।

सभा को संबोधित करते हुए, कलबुर्गी के एमडी मनोचिकित्सक डॉ. राहुल मंदकनल्ली ने कल्याण कर्नाटक क्षेत्र में बढ़ती नशीली दवाओं की लत पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा, “पिछले तीन-चार वर्षों में, नशे की लत के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया और वेब सीरीज़ सहित जनसंचार माध्यम युवाओं को काफ़ी प्रभावित कर रहे हैं। नशीली दवाओं का दुरुपयोग न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि सामाजिक कल्याण को भी कमज़ोर करता है। अभिभावकों और शैक्षणिक संस्थानों को सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि रोकथाम ही नशे के खिलाफ़ सबसे मज़बूत हथियार है। इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम छात्रों को नशे के जाल से बचाने में मदद करते हैं।”

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने सामूहिक ज़िम्मेदारी पर जोर देते हुए

अभियान का औपचारिक उद्घाटन किया। उन्होंने जोर देकर कहा, “नशे की लत को रोकना, उसका इलाज करने से कहीं ज़्यादा आसान है। शिक्षकों, प्रशासकों और अभिभावकों को छात्रों का मार्गदर्शन, शिक्षा और मार्गदर्शन करने के लिए मिलकर काम करना होगा। तभी हम ऐसे परिसर बना पाएँगे जो पूरी तरह से नशामुक्त हों।”

राष्ट्रीय संदर्भ पर प्रकाश डालते हुए, सामाजिक विज्ञान संकाय की डीन, प्रो. पवित्रा अलूर ने कहा, “2012 और 2018 के बीच, अध्ययनों से पता चला है कि भारत के 372 ज़िलों में नशे की लत में भारी वृद्धि हुई है। इसका मुकाबला करने के लिए, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 2020 में नशा मुक्त भारत अभियान शुरू किया। तब से, हर साल यह पखवाड़े भर चलने वाला अभियान देश भर में जागरूकता फैलाता है। इस वर्ष की थीम, ‘मिशन ड्रग-फ्री कैम्पस’, विश्वविद्यालयों के साथ गहराई से जुड़ती है।”

उद्घाटन कार्यक्रम में मनोविज्ञान के छात्रों द्वारा एक नाटक और जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें याद दिलाया गया कि नशा मुक्त परिसर केवल एक दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि एक साझा मिशन है जिसके लिए सतर्कता, शिक्षा और करुणा की आवश्यकता है।

सीयूके ने चार वर्षों की प्रगति की समीक्षा की, साहसिक सुधारों और भविष्य के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला



26 जुलाई, 2025: सीयूके ने पिछले चार वर्षों में विश्वविद्यालय की प्रगति की समीक्षा के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें माननीय कुलपति प्रो. बट्टु सत्यनारायण के नेतृत्व में महत्वपूर्ण सुधारों, शैक्षणिक प्रगति और बुनियादी ढांचे के विकास पर विचार किया गया।

कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ के पूर्व कुलपति और सीयूके की कार्यकारी परिषद के सदस्य, प्रो. प्रमोद बी. गार्ड ने प्रो. सत्यनारायण के नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने कहा, “वे एक कठोर और साहसिक निर्णयकर्ता हैं जिनका सीयूके के विकास में अतुलनीय योगदान है। उनके चार वर्ष न केवल सफल रहे हैं, बल्कि सार्थक भी रहे हैं। संस्थागत विकास योजना शुरू करने से लेकर शैक्षणिक और शोध गतिविधियों को मजबूत करने, वित्तीय अनुशासन, प्रशासनिक सुधारों और परीक्षा प्रणाली में सुधार तक—ये प्रयास ऐसे आधार स्तंभ हैं जो सीयूके को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।”

अपने अध्यक्षीय भाषण में, प्रो. सत्यनारायण ने भविष्य के नेताओं को गढ़ने में विश्वविद्यालय की भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, विश्वविद्यालय मानव संसाधन विकास के केंद्र हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से, हम विज्ञान, उद्यमिता, शासन, विधि और समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी तैयार कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कामकाज के केंद्र में लोग हैं—इसलिए मैंने शिक्षण और गैर-शिक्षण पदों को भरने, शोध परियोजनाओं और वित्त पोषण को दोगुना करने और छात्रावास सुविधाओं के विस्तार को प्राथमिकता दी। आज, हमारा परिसर पूरी तरह से आवासीय है और इसमें 2,500 से ज़्यादा छात्र हैं। पूर्ण डिजिटलीकरण के माध्यम से प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि हुई है, और सीयूके उन पहले विश्वविद्यालयों में से एक है जिन्होंने एनईपी 2020 और समर्थ पोर्टल के सभी 32 मॉड्यूल को पूरी तरह से लागू किया है।”

इस अवसर पर, वरिष्ठ शिक्षकों और प्रशासकों द्वारा विश्वविद्यालय के कामकाज पर प्रतिक्रिया साझा की गई। इस कार्यक्रम में वाधवानी फाउंडेशन के साथ उद्यमिता विकास पर एक प्रमाणपत्र कार्यक्रम का शुभारंभ, संस्थागत विकास योजना का विमोचन और प्रो. आर. एस. हेगड़ी द्वारा संपादित “एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस” नामक पुस्तक का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ, जिसमें उच्च शिक्षा में निरंतर विकास और नवाचार के प्रति सीयूके की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई।

सीयूके ने कारगिल विजय दिवस पर सैनिकों का सम्मान किया



26 जुलाई, 2025 – कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूके) ने अपनी एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) इकाई के माध्यम से कारगिल विजय दिवस का सम्मानपूर्वक स्मरण किया। इस कार्यक्रम में एक विशेष मोमबत्ती प्रज्वलन समारोह और चर्चा शामिल थी, जिसमें कई शिक्षक, शोधकर्ता, एनएसएस स्वयंसेवक और छात्र शामिल हुए।

“व्यापार युद्ध: अलगाववाद या बहुपक्षवाद?” पर विशेष व्याख्यान



8 अगस्त, 2025: गोखले राजनीति एवं अर्थशास्त्र संस्थान, पुणे के प्रो. कैलास थावरे ने कहा “शुल्क वृद्धि ने भारत के निर्यात, सर्राफा बाजार, शेयर बाजार और विदेशी मुद्रा बाजार को काफी प्रभावित किया है। और अमेरिका के साथ इस व्यापार युद्ध से भारत को 64 अरब डॉलर का नुकसान होने की आशंका है,” । वे कलबुर्गी स्थित कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के आर्थिक अध्ययन एवं योजना विभाग (डीईएसपी) में “व्यापार युद्ध: अलगाववाद या बहुपक्षवाद?” विषय पर बोल रहे थे।

उन्होंने आगे कहा, “भारत और अमेरिका के बीच चल रहा मौजूदा व्यापार युद्ध, जिसमें अमेरिका द्वारा भारतीय निर्यात पर टैरिफ बढ़ाने का मुद्दा शामिल है, भारत द्वारा रूसी तेल आयात के कारण है। चीन को अमेरिकी टैरिफ से कम नुकसान होता है क्योंकि चीन में ज्यादातर निवेशक अमेरिकी हैं। विदेशी निवेश वाले उद्यम (एफआईआई) चीन के निर्यात में 45% से ज्यादा का योगदान करते हैं, और इनमें से कई अमेरिकी या अमेरिका से संबद्ध हैं। अमेरिकी कंपनियों की चीन में व्यापक आपूर्ति श्रृंखलाएँ हैं, जिसका अर्थ है कि चीनी वस्तुओं पर टैरिफ अक्सर अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिकी कंपनियों को नुकसान पहुँचाते हैं, क्योंकि इससे उनकी इनपुट लागत बढ़ जाती है या उनका संचालन बाधित होता है।”

इस अवसर पर, डॉ. सुमा स्कारिया, प्रमुख, डीईएसपी, सीयूके, डॉ. एस लिंगमूर्ति, डॉ. बसवराज एम.एस., डॉ. मल्लेश, शोध विद्वान और छात्र उपस्थित थे।

‘कानूनी ज्ञान के बदलते आयाम’ पर विशेष व्याख्यान

8 अगस्त, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के विधि विभाग ने “कानूनी ज्ञान के बदलते आयाम” विषय पर एक विचारोत्तेजक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। इस सत्र में विधि के विद्वानों और छात्रों ने कानून के भविष्य को आकार देने में सीखने, सुनने और आलोचनात्मक सोच की उभरती भूमिका पर विचार-विमर्श किया।

मुख्य भाषण देते हुए, कर्नाटक राज्य विधि विश्वविद्यालय, हुबली के प्रो. जी. बी. पाटिल ने विधि छात्रों से पुस्तकों के साथ आजीवन संबंध बनाने का आग्रह किया। न्यायशास्त्र के दिग्गजों की विरासत का हवाला देते हुए, उन्होंने छात्रों को याद दिलाया कि विश्लेषणात्मक दृढ़ता और आनंदपूर्वक पढ़ने से व्याख्या कौशल निखर सकते हैं और अदालत में उनकी उपस्थिति मज़बूत हो सकती है।

एक और आयाम जोड़ते हुए, मैसूर विश्वविद्यालय के प्रो. टी. आर. मारुति ने सुनने के अनदेखे अनुशासन पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “सुनना कानून की मूल महाशक्ति है। ‘बैठकर देखने’ का अभ्यास ज्ञान को विवेक में बदल देता है। ध्यानपूर्वक सुनने से अवलोकन प्रखर होता है और स्पष्टता आती है, जो दोनों ही प्रभावशाली वकालत के लिए ज़रूरी हैं।”

विधि विभागाध्यक्ष, डॉ. एम. कुबाकड्डी ने सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि को अदालत की व्यावहारिक वास्तविकताओं से जोड़ने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और छात्रों को अकादमिक शिक्षा को पेशेवर व्यवहार से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

व्याख्यान का समापन डॉ. अनंत डी. चिंचुरे के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे यह कार्यक्रम चिंतन और प्रेरणा का एक मंच बन गया।

कार्यक्रम का समापन इस विचार के साथ हुआ कि कानूनी ज्ञान का सार पढ़ने और सुनने के सामंजस्य में निहित है।

सीयूके ने आपराधिक न्यायशास्त्र की पुनर्कल्पना पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की

12 अगस्त, 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के विधि विभाग ने “फ्राम माइक्रोनैरेटिव्स टू मेटानैरेटिव्स : रिडमैजिनिंग क्रिमिनल जुरिस्पुडेंस इन अ ग्लोबलाईज्ड वर्ल्ड” शीर्षक से अपने ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया, जिसमें दुनिया भर के शिक्षाविदों, कानूनी बिरादरी और मानवाधिकार संस्थानों की आवाज़ें एक साथ आईं।

उद्घाटन भाषण देते हुए, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी), नई दिल्ली के महासचिव श्री भरत लाल ने वैश्विक मंच पर भारत की नैतिक और संवैधानिक शक्तियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, “भारत का वैश्विक कद उसकी सौम्य शक्ति में गहराई से निहित है, जो लोकतंत्र, स्वतंत्र चुनाव, मानवाधिकारों और पर्यावरण संरक्षण पर आधारित है।” आपराधिक न्याय सुधारों पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने जेलों में भीड़भाड़, विचाराधीन कैदियों की बढ़ती संख्या और हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़ों को विधायी और न्यायिक ढाँचों से जोड़ने वाले न्यायशास्त्र की तत्काल आवश्यकता जैसे ज्वलंत मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित किया।

इस अवसर पर, कर्नाटक राज्य बार काउंसिल के अध्यक्ष श्री एस. एस. मित्तलकोड

ने प्रतिभागियों के विविध शोध योगदानों पर आधारित सार पुस्तिका का विमोचन किया। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने राष्ट्र निर्माण में विधि शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर देते हुए कहा, “हमें उच्च कुशल वकीलों की आवश्यकता है जो एक प्रगतिशील समाज के स्तंभ के रूप में खड़े होंगे और 2047 के भारत को आकार देने के लिए शिक्षकों के साथ मिलकर काम करेंगे।”

सम्मेलन में छह तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें आपराधिक न्यायशास्त्र के वैश्विक और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य, डिजिटल अपराध विज्ञान और अंतःविषयक दृष्टिकोण जैसे विषय शामिल थे। मॉरीशस, श्रीलंका, बांग्लादेश और भारत के अंतर्राष्ट्रीय पैनलिस्टों के साथ दो पूर्ण सत्रों के साथ-साथ चालीस शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

वैश्विक कानूनी चुनौतियों के साथ जमीनी स्तर पर विचारों को जोड़ने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह सम्मेलन एक समावेशी, अधिकार-आधारित और वैश्विक रूप से उत्तरदायी आपराधिक न्याय प्रणाली को आकार देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

सीयूके ने राष्ट्रीय ग्रंथपालक दिवस मनाया, डॉ. एस. आर. रंगनाथन की विरासत का सम्मान किया



14 अगस्त, 2025: सीयूके ने 12 अगस्त को राष्ट्रीय ग्रंथपालक दिवस मनाया और “भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक” डॉ. एस. आर. रंगनाथन को श्रद्धांजलि अर्पित की। यह समारोह देश में शिक्षा और ज्ञान को आकार देने में पुस्तकालयों की शाश्वत भूमिका की याद दिलाता है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने डॉ. रंगनाथन को पुष्पांजलि अर्पित करके और उनकी चिरस्थायी विरासत पर विचार करके इस समारोह का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा, “आज के डिजिटल युग में, पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष, अप्रचलित होने की धारणा के बावजूद, आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने पहले थे। इंटरनेट पुस्तकालयों का पूरक तो हो सकता है, लेकिन उनकी जगह कभी नहीं ले सकता।” छात्रों से पुस्तकालयों के महत्व को पुनः जानने का आग्रह करते हुए, उन्होंने पुस्तकालयों को “समग्र शिक्षा का केंद्र और असीम ज्ञान का स्रोत” बताया।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. पी. एस. कट्टिमनी ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और भारत में पुस्तकालय विज्ञान और पुस्तकालयाध्यक्षता के विकास में डॉ.

रंगनाथन के अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि डॉ. रंगनाथन के दृष्टिकोण ने पुस्तकालयों को सीखने, शोध और सामुदायिक संवर्धन के समावेशी स्थानों में बदल दिया। श्रद्धांजलि सभा में, छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष डॉ. बसवराज कुबकड्डी और उप-पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. सतीश तोटर ने छात्र कल्याण को बढ़ावा देने और शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में पुस्तकालयों की प्रासंगिकता पर ज़ोर दिया। विभिन्न विभागों के प्रमुख, पुस्तकालय कर्मचारी, शोधार्थी और छात्र भी इस समारोह में शामिल हुए, जिससे विश्वविद्यालय समुदाय द्वारा पुस्तकालयों की उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में भूमिका के प्रति सामूहिक सम्मान का पता चलता है।

इस आयोजन ने न केवल अतीत का सम्मान किया, बल्कि पठन, शोध और बौद्धिक जिज्ञासा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सीयूके की प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की। ऐसे युग में जहाँ डिजिटल उपकरणों का बोलबाला है, विश्वविद्यालय ने अपने समुदाय को याद दिलाया कि पुस्तकालय उच्च शिक्षा का केंद्र बना हुआ है—परंपरा को भविष्य की उभरती ज़रूरतों से जोड़ता है।

ओरिएंटेशन कार्यक्रम में सीयूके में नए पीजी छात्रों का स्वागत, अनुशासन और समग्र विकास पर जोर



14 अगस्त, 2025: सीयूके ने शैक्षणिक वर्ष 2025-26 के नव प्रवेशित स्नातकोत्तर छात्रों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें उन्हें आगे की शैक्षणिक यात्रा के लिए प्रेरणा के साथ व्यावहारिक मार्गदर्शन भी दिया गया।

नए छात्रों को संबोधित करते हुए, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने छात्रों को याद दिलाया कि सच्ची शिक्षा किताबों से आगे तक जाती है। उन्होंने कहा, “सिर्फ किताबें पढ़ने से आपका ज्ञान नहीं बढ़ेगा। ज्ञान व्यवहार सीखने, पारस्परिक संबंधों और एक समुदाय के रूप में मिलकर काम करने से भी आता है।” उन्होंने सफलता के लिए अनुशासन, प्रतिबद्धता और लचीलेपन को अनिवार्य गुणों के रूप में रेखांकित किया और छात्रों से जीवन की चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने का आग्रह किया। व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ते हुए, उन्होंने आगे कहा, “जब आप आर्थिक रूप से स्वतंत्र और मज़बूत बनते हैं, तो आप विकसित भारत-2047 के विज़न में योगदान देते हैं।”

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने विश्वविद्यालय की सहायता प्रणालियों पर प्रकाश

डाला और छात्रों की चिंताओं के समाधान के लिए मौजूद तंत्रों का उल्लेख किया। उन्होंने पाठ्येतर गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया और करियर निर्माण में संचार, नेतृत्व, समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच जैसे कौशलों की भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, “सीयूके न केवल डिग्रियाँ प्रदान करता है, बल्कि भविष्य के नेताओं को आकार देने वाले कौशल हासिल करने के लिए मंच भी प्रदान करता है।”

छात्र कल्याण के डीन डॉ. बसवराज एम. कुबकड्डी ने दोहराया कि विश्वविद्यालय के नियम और सुविधाएं छात्रों के कल्याण के लिए बनाई गई हैं, उन्होंने इस अभिविन्यास को एक परिवर्तनकारी शैक्षणिक यात्रा की शुरुआत बताया जो तैयारी और जिम्मेदारी दोनों को पोषित करती है।

कार्यक्रम में संकाय और अधिकारियों द्वारा छात्र कल्याण, खेलकूद, छात्रवृत्ति, परीक्षा, परामर्श और रैगिंग विरोधी उपायों पर संक्षिप्त जानकारी भी दी गई। प्रतीकात्मक समापन पर, छात्रों ने लेफ्टिनेंट डॉ. रंगनाथन के नेतृत्व में “नशा मुक्त भारत” का संकल्प लिया, जिससे एक सुरक्षित और सहयोगी परिसर के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता और पुष्ट हुई।



भारत की ताकत आत्मनिर्भरता में निहित है: सीयूके ने 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाया



15 अगस्त, 2025: सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने परिसर में 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा “भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र है। हम विज्ञान, तकनीक, वित्त या रक्षा के लिए किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं हैं। हमारी ताकत आत्म-सशक्तिकरण में निहित है”

अपने मुख्य भाषण में, प्रो. सत्यनारायण ने विश्वविद्यालय समुदाय से राष्ट्र निर्माण की भावना को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, “जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, विकसित भारत का मार्गदर्शक नारा होना चाहिए। उच्च शिक्षा संस्थानों पर इस दृष्टिकोण को आकार देने की जिम्मेदारी है। सीयूके पहले से ही अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए इसरो, डीआरडीओ और अन्य प्रमुख संस्थानों के साथ सहयोग कर रहा है।” विभिन्न विषयों के संकाय सदस्यों के योगदान पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने कहा, “विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी में हमारी परियोजनाएँ केवल अकादमिक अभ्यास नहीं हैं—वे राष्ट्र की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।”

समारोह के एक भाग के रूप में, कुलपति ने एकता और गौरव के प्रतीक के रूप में

एक जोशीली तिरंगा रैली का नेतृत्व किया। विश्वविद्यालय ने हर घर तिरंगा अभियान में भी सक्रिय रूप से भाग लिया और पिछले तीन दिनों में आसपास के गाँवों में जाकर देशभक्ति और सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश फैलाया।

इस अवसर पर कार्यकारी परिषद के सदस्य और पूर्व कुलपति प्रो. प्रमोद गाई, कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार, वित्त अधिकारी डॉ. बसवराज कुबकड्डी और प्रो. रंगनाथ, प्रो. चन्नवीर, प्रो. भोसले और डॉ. राजश्री सहित वरिष्ठ संकाय, डीन, प्रमुख, समन्वयक, संकाय, शोध विद्वान और छात्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम में गंभीरता और उत्सव का मिश्रण था। डॉ. रेशमा और डॉ. प्रकाश ने कार्यक्रम का संचालन किया, जबकि डॉ. जयदेवी और डॉ. नाकोड़ ने राष्ट्रगान और वंदे मातरम गाकर माहौल को देशभक्ति से भर दिया।

सीयूके में 79वां स्वतंत्रता दिवस न केवल स्वतंत्रता का स्मरणोत्सव था, बल्कि आत्मनिर्भरता, लचीलेपन और विकसित भारत 2047 के साझा दृष्टिकोण की दिशा में भारत की यात्रा की पुनः पुष्टि भी थी।

एसआईटी, कलबुर्गी में पाठ्यक्रम डिजाइन के भारतीय मॉडल पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया

21 अगस्त, 2025: भारतीय शिक्षण मंडल, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री बी. आर. शंकरानंद ने कहा “नौकरी शिक्षा का उपोत्पाद है; इसका असली उद्देश्य मानव निर्माण है।” वे सीयूके, भारतीय शिक्षण मंडल और शेटी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एसआईटी), कलबुर्गी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ‘पाठ्यक्रम डिजाइन का भारतीय मॉडल’ विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दे रहे थे।

भारत की शैक्षिक चुनौतियों की जड़ों का पता लगाते हुए, उन्होंने याद दिलाया कि कैसे 1835 की औपनिवेशिक नीतियों ने ब्रिटिश प्रशासन के लिए क्लर्क तैयार करके भारत की ज्ञान परंपराओं को पटरी से उतार दिया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, “200 वर्षों तक हम उस व्यवस्था का पालन करते रहे और मानसिक रूप से गुलाम बनते रहे। अब समय आ गया है कि एक ऐसा भारतीय पाठ्यक्रम तैयार किया जाए जो स्वस्थ व्यक्तियों, परिवारों और समाजों का पोषण करे और एक मज़बूत राष्ट्र का निर्माण करे।” उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा परिणाम-आधारित, शिक्षक-निर्देशित और साथ ही छात्र-केंद्रित होनी चाहिए, और इसका उद्देश्य सत्य, न्याय और निर्भयता हो - ये लक्ष्य राष्ट्रिय शिक्षा नीति के अनुरूप हैं।

सीयूके के माननीय कुलपति, प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य भाषण दिया। उन्होंने संस्कृति, विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में भारत की बढ़ती वैश्विक अपील पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, “विकसित भारत का लक्ष्य दुनिया को शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श प्रस्तुत करना है। मानव जीवन का सच्चा अर्थ भारतीय ज्ञान परंपराओं से आता है, जहाँ ज्ञान, प्रमाणपत्रों से कहीं अधिक मूल्यवान है।” उन्होंने ऐसे ढाँचे के निर्माण के लिए भारतीय शिक्षण मंडल की प्रतिबद्धता की सराहना की। अन्य वक्ताओं में भारतीय शिक्षण मंडल उत्तर प्रांत के अध्यक्ष श्री बसवराज अनामी और शेटी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स के निदेशक श्री अनिरुद्ध शेटी शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. रवींद्र हेगड़ी के स्वागत भाषण से हुई और समापन श्रीमती पल्लवी पाटिल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्रतिनिधियों ने पूज्य डॉ. शरबसवप्पा अप्पा की स्मृति में दो मिनट का मौन भी रखा। सम्मेलन में शिक्षाविदों, नेताओं और छात्रों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिसने भारतीय मूल्यों पर आधारित और विश्व की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी शिक्षा प्रणाली के निर्माण के साझा दृष्टिकोण की पुष्टि की।



योगाभ्यास की हृदय कला “अभ्यास” है

“योग एक ऐसा प्रकाश है, जो एक बार प्रज्वलित हो जाए तो कभी बुझता नहीं। आपका अभ्यास जितना बेहतर होगा,

आपकी लौ उतनी ही प्रज्वलित होगी।” —बी.के.एस. अयंगर



आपकी सहभागिता
की अपेक्षा

संपादकीय दल

मुख्य संपादक: प्रो. बट्टू सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके संपादक: डॉ. ओइनम बेदाजीत मीतेई; सहयोगी संपादक: डॉ. के. कार्तिक, डॉ. रूपा रानी सोनोवाल,
डॉ. दीप्ति; प्रेस विज्ञप्ति: डॉ. गणपति बी सिन्नूर; हिन्दी अनुवाद : डॉ. रेशमा एल. नदाफ

छात्र संपादक: इंदुजा मजूमदार और पद्मजा पी जी
प्रकाशक: प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव, सीयूके

कृपया विभागीय कार्यक्रमों/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ई-मेल: bulletin@cuk.ac.in पर भेजें ताकि इसे सीयूके बुलेटिन में प्रकाशित किया जा सके।

